Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JAN-FEB, 2019, VOL- 6/49

राष्ट्रीय विकास में शिक्षा की भूमिका

डॉ0 अखिलेश कुमार सिंह
असि0प्रो0 (बी0एड0), रा0 महाविद्यालय, पैठाणी, पौड़ी गढवाल, उत्तराखण्ड

Abstract

शिक्षा, नियोजन एवं राष्ट्रीय विकास अन्तर्सम्बन्धित है। कल्याण एवं संवृद्धि इनके सामान्य लक्ष्य है। शिक्षा नियोजन और राष्ट्रीय विकास के विभिन्न कार्यों के लिए विशेषज्ञों का निर्माण करती है। राष्ट्र का सर्वोतन्मुखी विकास शिक्षा को भी प्रभावित करता है। शिक्षा और नियोजन के क्षेत्र में किये गये प्रयास राष्ट्रीय विकास में फलीभूत है (National Development is The Fruit of Our Efforts in The Field of Education and Planning) एक विकासशील देश निर्देशन एवं प्रगति के लिए शिक्षा और नियोजन की ओर ही देखता है। एक विकसित देश अपनी प्रगति को स्थायी बनाने के लिए अपनी शिक्षा पद्धति और नियोजन में वांछित परिवर्तन करता है।

Keywords- *प्रस्तावना, राश्ट्रीय विकास के आयाम शिक्षा की भूमिका।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना–

भारत का भाग्य अब कक्षाओं में निर्मित हो रहा है। विज्ञान और तकनीकी के इस युग में यह शिक्षा ही है जो लोगों की संवृद्धि, भलाई एवं संरक्षण का स्तर निर्घारित करती है। राश्ट्रीय पुनर्निर्माण के महान कार्य में हमारी सफलता स्कूलों एवं कालेजों से निकलने वाले लोगों की संख्या तथा गुणवत्ता पर निर्भर करती है। राश्ट्रीय पुनर्निमाण का मुख्य प्रायोजन लोगों के जीवन स्तर को ऊंचा करना है। यदि राश्ट्र के विकास की गति तेज करना है तो सु–परिभाशित सशक्त एवं विचारपूर्ण शिक्षा नीति का निर्माण करना होगा और शिक्षा को स ाक्त बनाने, सुधारने तथा फैलाने के लिए सुनिश्चित एवं शक्तिशाली कार्य करने होंगे। शिक्षा को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तन के लिए एक सशक्त साधन के रुप में प्रयोग करना होगा। अतः उन दूरवर्ती राश्ट्रीय आकांक्षाओं एवं राश्ट्रीय विकास के कार्यक्रमों के साथ जोड़ना होगा जिनमें देश लगा हुआ है और उन निकटवर्ती कठिन समस्याओं के साथ भी जोड़ना होगा जिनका देश को सामना करना है। इस उद्देश्य के लिए शिक्षा को उत्पादन वृद्धि सामाजिक एवं राश्ट्रीय एकता की प्राप्ति तथा आधुनिकता की प्रक्रिया को तेज करने और सामाजिक नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की ओर अग्रसर करना होगा। शिक्षा राश्ट्रीय विकास का बुनयादी आधार है। शिक्षा पर लगाई गई पूंजी समूचे राश्टीय विकास को प्रभावित करती है। इस प्रकार वह राश्ट्रीय विकास की रीढ़ बन जाती है।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

राश्ट्र के किसी एक क्षेत्र के विकास को राश्ट्रीय विकास नहीं कहा जा सकता है। राश्ट्र के सभी तत्व महत्वपूर्ण होते है और उनका परस्पर सम्बन्ध होता है। यदि एक भी तत्व अविकसित रहेगा तो उसका दूसरे तत्वों पर अवश्य प्रभाव पड़ेगा। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि आर्थिक विकास राश्ट्रीय विकास का महत्वपूर्ण अंग है परन्तु उसे राश्ट्रीय विकास का पर्याय नहीं समझना चाहिए। राश्ट्रीय विकास राश्ट्र के विभिन्न आयामों एवं व्यक्तियों के विकास एवं पुनर्रचना की प्रक्रिया है। इसमें उद्योगों कृशि सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं की अभिवृद्धि एवं उनका विस्तार सम्मिलित है। राश्ट्र विकास का अर्थ है भारत का समूचा विकास। यह देश के किसी एक क्षेत्र के विकास तक सीमित नहीं है। संक्षेप में राश्ट्रीय विकास के अन्तर्गत अग्रलिखित है –

- राश्ट्रीय विकास लोगों को अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने को प्रोत्साहित करने की प्रक्रिया है।
- राश्ट्रीय विकास ऐसी प्रक्रिया है जिसमें सब राश्ट्रीय कार्य प्रगति की ओर लगाये जाते है।
- राश्ट्रीय विकास उन भाक्तियों अथवा कारकों का एकीकरण है जिन पर देश की उन्नति का दायित्व है।
- विज्ञान एवं तकनीकी की चुनौतियों का सामना करने का विधिवत प्रयास राश्ट्रीय विकास है।
- राश्ट्रीय विकास उद्योग और कृशि तथा धनियों एवं निर्धनों में समझौता है।
- राश्ट्रीय विकास से तात्पर्य आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक क्षेत्र में न्याय है।

राश्ट्र के पर्याप्त विकास के लिए सभी दे ावासियों की सम्पूर्ण संलग्नता प्रतिबद्धता एवं समर्पिता अत्यन्त आवश्यक है। राश्ट्रीय विकास के लिए सहायक पर्यावरण के निर्माण के लिए प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में अपना पूरा योगदान देना चाहिए।

राष्ट्रीय विकास के आयाम (Dimensions of National development)

1. **आर्थिक विकास**–राष्ट्र के आर्थिक क्षेत्र के विकास को आर्थिक विकास कहा जाता है। आर्थिक विकास ऐसी प्रक्रिया है जिससे देश की वास्तविक राष्ट्रीय आय लम्बे समय तक बढ़ती है। वास्तविक राष्ट्रीय आय देश के तैयार सामानों एवं सेवाओं का समूचा परिणाम है जो धन के रूप में नहीं बल्कि वास्तविक अर्थों में व्यक्त होता है–

- आर्थिक विकास ऐसी प्रक्रिया है जिसमें देश की वास्तविक प्रति व्यक्ति आय लम्बी अवधि में बढ़ती है।
- भौतिक हित का स्थायी एवं धर्म निरपेक्ष सुधार जो वस्तुओं एवं सेवाओं के बढ़ते हुए प्रवाह में प्रतिबिम्बित होता है।
- मानवीय संसाधनों का विकास।

i. प्रत्येक व्यक्ति के लिए पूर्ण एवं उचित रोजगार को सुनिश्चित बनाना।
ii. सभी के वेतन वृद्धि को सुनिश्चित बनाना।

iii. कृषि का विकास।

iv. अमीरी और गरीबी की खाई को कम करना।

2.**राजनीतिक विकास (Political development)**–राजनैतिक विकास में देश के लोगों के जीवन का राजनीतिक विकास निहित है। राजनीतिक विकास से तात्पर्य वह संवृद्ध राजनीतिक क्षमता से परिपूर्ण राजनीतिक व्यवस्था है।

हमारे देश में राजनीतिक विकास के तीनों पक्षों की आवश्यकता है–

a) लोकतन्त्र को सशक्त बनाना

b) देश की सुरक्षा

c) जनता में जागृति

राजनीतिक विकास का अर्थ है–

i. एक संवैधानिक सरकार

ii. मानवीय मूल्यों की स्वीकृति

iii. संसदीय लोकतन्त्र

iv. कानून की दृष्टि से सभी लोगों को समानता

v. नागरिकों के मौलिक अधिकार एवं कर्तव्य

vi. वोट देने का अधिकार

vii. कानून की अच्छी प्रक्रिया।

उपर्युक्त सभी सिद्धान्तों का भारत के संविधान में उल्लेख है। हमें इन सिद्धान्तों का उचित प्रयोग करना चाहिए।

3. **सामाजिक आयाम (Socialdimension)** देश के सामाजिक आयाम–

का अर्थ है–सामाजिक विकास, सामाजिक प्रगति, सामाजिक एकता और सामाजिक आधुनिकीकरण। यह समाज के सदस्यों में वांछनीय कार्यकुशलता के विकास की ओर इंगित करता है। राश्ट्रीय विकास के सामाजिक आयाम का अर्थ है–

- सामाजिक बुराईयों जैसे बाल विवाह, सती प्रथा, भीख मांगना, भ्रष्टाचार, दहेज, नशीली दवाओं का व्यसन आदि से मुक्ति
- नारी सम्मान
- अनुसूचित जातियों का सम्मान
- जाति प्रभा से उपर उठना
- समाज का खलापन

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

- सामाजिक वर्गीकरण में लचक
- सामाजिक भलाई परियोजना
- सामाजिक संरक्षण

4.**सांस्कृतिक आयाम (Culturaldimension)**–समाज की संस्कृत से अभिप्राय है समाज की समूची जीवन पद्धति। ज्ञान परम्परा रीति–रिवाज, नैतिकताएं, कानून, पूजा पद्धति, कला दर्शन आदि में सभी देश की 'संस्कृति' में सम्मिलित है। सांस्कृतिक आयाम के तत्व निम्नलिखित है–

1. व्यवहार के रूप में
2. साहित्य एवं उसकी शाखाएं
3. कला एवं उसके विविध रूप
4. धर्म
5. शैक्षिक और मनोरंजक संस्थाएं
6. सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक संस्थाएं

राष्ट्रीय विकास में शिक्षा की भूमिका

(Role of Education in National Development)

शिक्षा को राष्ट्रीय एवं आर्थिक विकास का प्रभावशाली साधन माना गया है। राष्ट्रीय एवं आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका निम्नलिखित है–

1. **भौतिक सम्पदा का उत्पादन** –शिक्षा भौतिक सम्पदा के उत्पादन में सहायता प्रदान करती है और भौतिक सम्पदा आर्थिक विकास का प्रतीक है। समूचे विश्व में शिक्षा का उपयोगी उत्पादन क्रिया के रूप में मान्यता प्राप्त है क्योंकि यह विभिन्न क्षेत्रो में राष्ट्र संवृद्धि को विकसित करती है।
2. **प्रतिभाओं एवं गुणों का विकास**–आर्थिक विकास में प्रतिभा एक महत्वपूर्ण कारक है और शिक्षा प्रतिभाओं के विकास में सहायता प्रदान करती है। आर्थिक विकास की गति को तेज करने के लिए मानसिक दृष्टिकोण तथा तकनीकी ज्ञान एवं कौशल में परिवर्तन अत्यन्त आवश्यक है। जागरूक मानसिकता, ठीक ज्ञान, उचित कौशल एवं वांछित दृष्टिकोण उच्च स्तरीय आर्थिक विकास को सुनिश्चित बनाते है। शिक्षा इन गुणों तथा प्रतिभाओं का विकास करती है। यह शिक्षा ही है जो मनुष्य की रचनात्मक आकांक्षाओं को जागृति करती है। उत्तम संगठनात्मक कौशल तथा सूक्ष्म अनुसंधानात्मकता शिक्षा के ही प्रत्यक्ष परिणाम है। कुशलता प्राप्त मानव शक्ति आर्थिक विकास की बुनियाद है और शिक्षा कुशलता प्राप्त मानव शक्ति तथा राष्ट्रीय विकास का मुख्य स्त्रोत है।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

3. **मानव–संसाधनों का विकास**–शिक्षा मानव संसाधन विकास में सशक्त भूमिका निभाती है। मानव संसाधनों का विकास आर्थिक विकास का मुख्य साधन है। मानव संसाधन विकास दो पक्ष होते है।

1. परिमाणात्मक
2. गुणात्मक

परिमाणात्मक पक्ष प्रभावशाली कार्यशक्ति तथा कार्य के समय की ओर इंगित करता है और गुणात्मक पक्ष श्रम के गुणों अर्थात कौशल, ज्ञान
तथा दृष्टिकोण की ओर इंगित करता है। इन्हीं गुणों पर विकास गति निर्भर करती है।

4. **परिमाणात्मक एवं गुणात्मक विकास**

(Quantitative and Qualitative Development)

शिक्षा आर्थिक विकास के दोनों पक्षों परिमाणात्मक एवं गुणात्मक में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अच्छे श्रमिकों, कुशल प्रशसकों सुप्रशिक्षित अध्यापकों तथा अन्य व्यवसायों की व्यवस्था के लिए शैक्षिक परिवर्तन तथा प्रयोगात्मक दृष्टिकोण का विकास अत्यन्त आवश्यक है और इसके लिए
आवश्यक कार्य व्यवस्था की जानी चाहिए।

शिक्षा में गुणात्मक विकास की क्षमता होती है। यह मानव संसाधन को अधिक उत्पादन बनाने की क्षमता रखती है उदाहरण स्वरूप–

1. रूस–21वीं शताब्दी में रूस का उदाहरण तथ्यों को प्रमाणिक करता है, परीक्षण से यह तथ्य सामने आया है कि प्राइमरी शिक्षा प्राप्त कार्यकताओं का कार्य उसी वयवर्ग के तथा वही काम करने वाले अनपढ़ कार्यकर्ताओं की अपेक्षा डेढ़ गुना अधिक उत्पादन था।
2. अमेरिका ने भी अपनी राष्ट्रीय आय का आधा भाग शिक्षा पर खर्च करके आर्थिक दृष्टि को चरमोत्कर्ष तक पहुंचाया है।
3. डेनमार्क और स्वीटजर लैण्ड, मैक्सोको, ब्राजील की तुलना में डेनमार्क एवं स्वीट्जर लैण्ड से प्रति व्यक्ति आय ऊंची है और इसका श्रय विद्यमान प्रभावशाली शिक्षा प्रणाली को जाता है।

राष्ट्र के पर्याप्त विकास के लिए सभी देशवासियों की सम्पूर्ण संलग्नता, प्रतिबद्धता एवं समर्पिता अत्यन्त आवश्यक है। राष्ट्रीय विकास के लिए सहायक पर्यावरण के निर्माण के लिए प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में अपना पूरा योगदान देना चाहिए यह एक मानवतावादी धारणा है। यह देश के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास तथा लोगों के स्वास्थ्य के विकास की ओर इंगित करता है। विकसित देशों की संवृद्धि इस बात को प्रमाणित करती है कि उनकी संवृद्धि का प्रभावशाली साधन शिक्षा है।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संदर्भग्रन्थ सूची

पाण्डेय, डा० रामसकल, भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास।

प्रो० महत्ता, डी०डी०, आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा।

पाठक, पी0डी0, समसामयिक भारतीय शिक्षा।

शर्मा, गणपति राय, उदीमान भारतीय समाज में शिक्षा।

शर्मा आर०ए०, अध्यापक शिक्षा एवं प्रशिक्षण तकनीकी।